Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 SHISRRJ | Volume 4 | Issue 2 | ISSN : 2581- 6306

आधुनिक काल के कवि जनार्दन मणिः एक परिचय

डॉ0 देवनारायण पाठक (उपाचार्य)
बबली सिंह (वरिष्ठ शोध अध्येता)
संस्कृत विभाग
नेहरू ग्राम भारती मानित्
विश्वविद्यालय प्रयागराज,उत्तर प्रदेश।

Article Info
Volume 4, Issue 2
Page Number : 142-145

Publication Issue :
March-April-2021

Article History
Accepted : 01 April 2021
Published : 10 April 2021

शोध आलेख सार :–प्रो0 जनार्दन प्रसाद पाण्डेय 'मणि' जी का जन्म 02 अक्टूबर सन् 1962 में उत्तर प्रदेश प्रान्त के जौनपुर जनपद के 'शकरा' नामक ग्राम मे हुआ। आपकी माता स्व0 रमा देवी एवं पिता श्री कामता प्रसाद पाण्डेय है। बचपन में पाँच वर्ष की अवस्था में आपकी माता का देहावसान हो गया तदनन्तर आपकी हृदयद्रवित भावना ने कवित्त्व रचना की तरफ उन्मुख किया। मणि जी आधुनिक काल के चमकते हुए रत्न की भाँति आलोकित एवं आभासित होकर अपनी कृतियों से समाज में अपनी प्रतिभा की छठा बिखेर रहे हैं। आपकी रचनाएं समाज एंव राष्ट्र से सम्बन्धित हर पहलू के समस्या एवं समाधान पर बल देते हुए, समाज मे एक परिवर्तन लाने की दिशा में अग्रसर है। आप वर्तमान में राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान केन्द्रीय विश्वविद्यालय में रीडर के पद पर आसीन पद की शोभा को निरन्तर बढ़ा रहे हैं।

मुख्य बिन्दु :– सारस्वत परिचय, प्रेरणा, रचनायें एवं कवित्त्व, पुरस्कार एवं सम्मान, अन्य उपलब्धि।

शोध प्रविधि – प्रस्तुत शोध शीर्षक की विधि सोदाहरण एवं वर्णनात्मक है।

1. सारस्वत परिचय–आपकी प्रारम्भिक शिक्षा ग्रामीण परिवेश में सम्पन्न हुयी तथा इलाहाबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय में एक मेधावी छात्रों की श्रेणी में आपने उच्च शिक्षा पूर्ण की। सन् 1984 में एम0ए0 संस्कृत की वार्षिक परीक्षा में आपने विश्वविद्यालय की वरीयता सूची में गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त किया। आपने इलाहाबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय से ही नाट्यशास्त्र में उपलब्ध ''काव्यशास्त्रीय तत्वों का समीक्षात्मक अध्ययन'' विषय पर ''डाक्टर ऑफ फिलॉसफी'' (डी0फिल्0) की उपाधि अर्जित किया। इसके बाद विश्वविद्यालय अनुदान आयोग नई दिल्ली से 'रिसर्च एसोसिएट' के रूप में चयनित होकर इलाहाबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय से ही 'संस्कृत वाङ्मय में विद्यमान प्रमुख "रामकाव्यों का तुलनात्मक साहित्यिक समालोचन" विषय पर पी0डी0एफ0 (पोस्ट डॉक्टरल फेलॉशिप) शोध किया। आपने इस दौरान इसी विश्वविद्यालय में ही शैक्षणिक कार्य भी सम्पन्न किया।

इसके बाद राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, लैंसडौन, जयहरिखाल पौड़ी गढ़वाल में प्राध्यापक पद को अलंकृत किया। वर्तमान में आप राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय (गंगानाथ झा परिसर) प्रयागराज में रीडर पद की शोभा को अभिभूत कर रहे हैं।

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

2. **प्रेरणाः–** किसी बालक के जीवन में सर्वोच्च स्थान उसकी जन्मदात्री माता का होता है अतः आपने भी माता के निधन के पश्चात अपनी करूणा और वेदना को व्यक्त करने का माध्यम साहित्य सर्जना को बनाया। यह कार्य कोई कवि हृदय ही कर सकता है ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार क्रौञ्च पक्षी के जोड़े के दुःख को देखकर महर्षि वाल्मीकि के मुख से अनायास ही करुण रस में व्याप्त यह मार्मिक 32 अक्षरों वाला श्लोक छन्द युक्त श्लोक निःसृत हुआ।

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः
यत्क्रौञ्चमिथुनादेकमवधीः काममोहितम्।। 1

अतः आपने भी अपनी ममतामयी मामा की छाया सिर से हट जाने के बाद साहित्य सर्जना करना प्रारम्भ किया। एक प्रोफेसर से कवि लेखन बनने का यही एक मात्र प्रेरणा रही है। प्रारम्भिक लेखन कार्य आपने अपनी ग्रामीण भाषा लोकभाषा जौनपुरी में किया तदनन्तर आपने हिन्दी तथा संस्कृत व्याकरण के पुष्ट हो जाने के पश्चात संस्कृत भाषा में लेखन कार्य प्रारम्भ किया। यह आपके सरल एवं सहज स्वभाव का गुण है कि संस्कृत भाषा पर अपना सम्पूर्ण ज्ञान अर्जित किए बिना ही लेखन कार्य प्रारम्भ नहीं किया। यही गुण आपका आधुनिक काल में व्याप्त संस्कृत कवियों से आपकी पृथकता सिद्ध करता है। आपके मित्र उपेन्द्र पाण्डेय जी वाराणसी काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा प्राप्त जानकारी के आधार पर आपने अपने जीवन की विषम से विषम परिस्थिति में भी लेखन कार्य को बाधित नहीं किया तथा अपनी पीड़ा को वर्तमान समाज की पीड़ा से जोड़ते हुए लेखन कार्य का अनवरत सफर जारी रखा। यह भी आपके व्यक्तित्व की एक मूल कड़ी के रूप में आधुनिक काल में परिलक्षित होती है।

आपकी रचनाओं को पढ़ने से ऐसा अनुभव होता है कि समस्त पक्तियाँ पाठक के ही जीवन पर चरितार्थ हो रही है। उदाहरण स्वरूपः–

शंङ्काऽलेनाहर्निशं दग्धीकृतं ननु यौवनम्।
इदमेव किं रे कल्पने! मुग्धीकृतं मम जीवनम्।। 2
दृप्तविघ्नैरपि प्रोन्नतं जीवनम्।
दृश्यतां दृश्यतां मामकं जीवनम्।।

इस प्रकार आपकी कविता की समस्त पंक्तियाँ व्यक्ति के स्वयं के ही जीवन पर घटित होकर किसी भी समस्या के लिए समाधान रूप में वर्णित है।

रचनाएं एवं कवित्त्वः–प्रो0 जनार्दन प्रसाद पाण्डेय 'मणि' जी के अब तक मौलिक सम्पादित, अनूदित एवं समीक्षाग्रन्थ के रूप में 11 ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं।

1. निस्यन्दिनी (मौलिक 1995)
2. जानकीगीतम् (अनूदित 1995)
3. नीराजना (मौलिक 2001)
4. रागिणी (मौलिक 2002)
5. जिजीविषा (मौलिक 2009)
6. संस्कृत वाङ्मये कवि शिक्षा (समीक्षात्मक ग्रन्थ 2011)
7. सकलरस सार संग्रह (सम्पादित एवं अनूदित 2011)
8. नृपविलासः (सम्पादित 2011)
9. दीपमाणिक्यम् (मौलिक 2018)
10. सौरभेयी (मौलिक 2019)

आपके द्वारा 97 शोध पत्रों का लेखन कार्य हो चुका है, जिनमें से 45 का प्रकाशन कार्य भी पूर्ण हो चुका है। आपने 96 राष्ट्रीय एंव अन्ताराष्ट्रिय शोध संगोष्ठियों/सम्मेलनों में शोध पत्रों का वाचन किया हैं जिनमें से 90 राष्ट्रीय सम्मेलन है तथा 6 अन्ताराष्ट्रिय सम्मेलन है। राष्ट्रीय एवं अन्ताराष्ट्रिय सम्मेलनों के कवि सम्मेलनों में आपने अपनी रचनाओं का काव्य–पाठ प्रस्तुत किया है।

आपको क्योटो विश्वविद्यालय जापान में आयोजित विश्व संस्कृत सम्मेलन के संस्कृत कवि सम्मेलन में काव्य पाठ करने के लिए वर्ष 2009 में भारत सरकार द्वारा भेजा गया था। आपने इलाहाबाद रेडियो के लिए "गंगा की मंगल यात्राः उद्गम से प्रदेश के सीमान्त तक" शीर्षक वाले एक नाट्यरूपक (सीरियल) का लेखन किया, जिसका 14 एपिसोड (भाग) में आकाशवाणी प्रयागराज से प्रसारण हुआ।

पुरस्कार एवं सम्मानः– आपको प्राप्त पुरस्कार एवं सम्मान की संख्या लगभग 23 है।

1. महाकवि कालिदास सम्मान (वैदिक शोध संस्थान, कण्वाश्रम कोटद्वार गढ़वाल 1993)
2. विविध पुरस्कार (उ0प्र0 संस्कृत संस्थान लखनऊ उ0प्र0 सरकार 1995)
3. पं प्रतापनारायण मिश्र स्मृति पुरस्कार (भाऊ राव देवरस सेवा न्यास लखनऊ 1995)
4. पण्डितराज जगन्नाथ पुरस्कार (दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार 1997)
5. सर्टिफिकेट ऑफ ऑनर (दशम विश्व संस्कृत सम्मेलन बैंगलोर, भारत 1997)
6. व्यासध्वज पुरस्कार (श्रेष्ठ संस्कृत कवि पुरस्कार चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ 2000)
7. व्यासध्वज पुरस्कार (श्रेष्ठ संस्कृत कवि पुरस्कार चौधरी चरण सिंह मेरठ 2001)
8. विशेष पुरस्कार (उ0प्र संस्कृत संस्थान लखनऊ उ0प्र0 सरकार 2001)
9. महर्षि बादरायण व्यास सम्मान (राष्ट्रपति पुरस्कार भारत सरकार नई दिल्ली–2002)
10. विविध पुरस्कार (उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान लखनऊ उ0प्र0 सरकार)
11. कालिदास सम्मान (कालिदास जल भू स्मारक समिति काविल्का रूद्र प्रयाग उत्तराखण्ड 2002)
12. महर्षि कण्व सम्मान (वैदिक शोध संस्थान कण्वाश्रम कोटद्वार उत्तराखण्ड 2002)
13. साहित्य प्रवीण सम्मान (राष्ट्र भाषा प्रचार परिषद, प्रयाग उ0प्र0 2008)
14. प्रभा श्री सम्मान (सोनाञ्चल साहित्य संस्थान सोनभद्र उ0प्र0 2011)
15. विशेष पुरस्कार (उ0प्र0 संस्कृत संस्थान लखनऊ उ0प्र0 सरकार 2012)
16. विविध पुरस्कार (उ0प्र0 संस्कृत संस्थान लखनऊ उ0प्र0 सरकार 2012)
17. साहित्यकार सम्मान (ज्योतिष, कर्मकाण्ड एवं अध्यात्म संस्थान इलाहाबाद 2015)
18. मछलीशहर रत्न सम्मान (रामेश्वरनाथ सोसल एण्ड वेलफेयर फाउण्डेशन मछलीशहर जौनपुर 2015)
19. संस्कृत महामहोपाध्याय सम्मान (हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग 2016)
20. विशिष्ट पुरस्कार (उ0प्र0 संस्कृत संस्थान लखनऊ 2016)
21. संस्कृत भूषण सम्मान (राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान भोपाल परिसर 2016)
22. पण्डितराज सम्मान (देववाणी परिषद दिल्ली–2016)
23. विविध पुरस्कार (उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान लखनऊ–2017) इत्यादि पुरस्कार जो आपको प्राप्त हुए हैं।

अन्य उपलब्धिः– आपकी प्रतिभा लेखन कला के अतिरिक्त अभिनय कौशल में हमारे सम्मुख परिलक्षित होती है, आप अद्वितीय प्रतिभा सम्पन्न एक श्रेष्ठ कवि, लेखक एवं नायक के तौर पर समाज में स्वयं को प्रतिष्ठित कर चुके हैं। आपने अब तक 10 से अधिक नाटकों में अभिनय किया है तथा 15 से अधिक नाटकों का निर्देशन भी किया है।

आपके निर्देशन में लगभग 17 शोधच्छात्र एवं शोधच्छात्राओं को विद्या वारिधि (पी0एच0डी0) की उपाधि प्राप्त हो चुकी है। आपकी रचनाओं पर देश के विविध विश्वविद्यालयों में शोध कार्य हो रहा है तथा आपके निर्देशन में लगभग 10 शोधच्छात्रों का शोधकार्य जारी है। आप वर्तमान में भी अनवरत सारस्वत तपश्चर्या में संलग्न है।

निष्कर्षः– अतः निष्कर्षतः हम कह सकते है कि आप आधुनिक संस्कृत साहित्य के कवियों में अपनी प्रतिभा, बुद्धिक्षमता एवं भाषाकौशल के ज्ञान के बल पर काव्य सर्जना की कसौटी पर अपना एक विशिष्ट स्थान

स्थापित करते हैं। इसमें तनिक भी संदेह नहीं है कि आप एक सरल, सहज एवं बेहद सुलझे हुए व्यक्तित्व के धनी है। आपकी वाणी ही रसिकों को अपनी तरफ आकृष्ट करने में पर्याप्त है तो आपकी रचनाओं का क्या कहना? युगों–युगों तक आपको आपकी कविता में छिपी हृदयगत भावना के रूप में स्मरण किया जाएगा तथा आपकी कवित्त्वमयी प्रतिभा से समस्त संसार आलोकित और आलोडित हो जाएगा। एक शिष्य होने के नाते हमारी भी हृदयस्थ अभिलाषा है कि आप आधुनिक संस्कृत साहित्य के कवियों में सर्वोच्च शिखर पर उदयाचल पर सूर्य की भाँति अधिष्ठित रहें।

पाद टिप्पणी

1. रामायण बालकाण्ड द्वितीय सर्ग श्लोक संख्या 15
2. निस्यन्दिनी पेज संख्या 33, गीत संख्या–11
3. निस्यन्दिनी पेज संख्या 54 गीत संख्या–32
4. व्यक्तिगत सूचना स्रोत

संदर्भ ग्रन्थ सूची

क्र.	पुस्तक	लेखक	प्रकाशक	वर्ष
1.	रामायण	गीता प्रेस	गीताप्रेस	
2.	निस्यन्दिनी	डॉ0 जनार्दन प्रसाद पाण्डेय 'मणि'	वैशम्यापन प्रकाशन 7 एल/7ए शिवपुरी कालोनी गोविन्दपुर प्रयागराज, उ0प्र0	1995